



औपनिवेशिक भारत में धार्मिक राष्ट्रवाद और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण: भारत सेवाश्रम संघ का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Ram Ratan

Research Scholar, Department of Arts & Social Sciences, North East Frontier Technical University, Arunachal Pradesh.

Dr. Abha B Shah

Asst. Professor, Department of Arts & Social Sciences, North East Frontier Technical University, Arunachal Pradesh.

सार

यह अध्ययन भारत सेवाश्रम संघ की भूमिका का विश्लेषण करता है, विशेष रूप से धार्मिक राष्ट्रवाद, सांप्रदायिक संगठनों के प्रभाव और राष्ट्रीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण के संदर्भ में। औपनिवेशिक भारत के परिवेश में, जब सांस्कृतिक अस्मिता और सामाजिक एकता चुनौतियों का सामना कर रही थी, तब इस संगठन ने धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों के पुनर्जीवन के माध्यम से समाज में आत्मगौरव और राष्ट्रीय चेतना को सुदृढ़ करने का प्रयास किया। संघ ने न केवल धार्मिक राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित किया, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य और आपदा राहत जैसी सामाजिक सेवाओं के माध्यम से व्यापक जनसमर्थन भी अर्जित किया, जिससे इसकी स्वीकार्यता विभिन्न वर्गों में बढ़ी। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण के इस प्रयास ने भारतीय समाज को एक साझा पहचान प्रदान की, हालांकि धार्मिक पहचान पर बल देने के कारण कुछ हद तक सांप्रदायिक प्रवृत्तियों और सामाजिक ध्रुवीकरण की संभावनाएँ भी उत्पन्न हुईं। इसके बावजूद, संघ की भूमिका को एक संतुलित दृष्टिकोण से देखने पर यह स्पष्ट होता है कि उसने धार्मिक विचारधारा को सामाजिक सेवा और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण के साथ जोड़कर एक बहुआयामी प्रभाव उत्पन्न किया। समग्र रूप से, यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत सेवाश्रम संघ ने भारतीय समाज में राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक जागरूकता और सामाजिक एकता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जो स्वतंत्रता-पूर्व भारत के सामाजिक और वैचारिक परिवर्तन की प्रक्रिया का एक अहम हिस्सा था।

मुख्य शब्द: औपनिवेशिक, भारत धार्मिक, राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक पुनर्निर्माण, भारत सेवाश्रम संघ.

परिचय

19वीं शताब्दी का भारत सामाजिक, राजनीतिक और वैचारिक स्तर पर एक संक्रमणकाल से गुज़र रहा था। एक ओर ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता अपने प्रशासनिक ढाँचे और वैचारिक प्रभुत्व के साथ भारतीय समाज को बदलने का प्रयास कर रही थी, वहीं दूसरी ओर देश में आत्मचिंतन और आत्मसुधार की लहर चल पड़ी थी। इस काल में धार्मिक सुधार आंदोलनों की शुरुआत हुई, जिनका मूल उद्देश्य केवल धार्मिक कुरीतियों का निवारण ही नहीं, बल्कि एक नई सामाजिक चेतना का निर्माण भी था।

धार्मिक सुधार आंदोलनों जैसे ब्रह्म समाज, आर्य समाज, अलीगढ़ आंदोलन, तथा थियोसोफिकल सोसाइटी ने न केवल भारतीय समाज के अंतर्निहित ढाँचे को चुनौती दी, बल्कि राष्ट्रवादी चेतना की नींव भी रखी। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि धार्मिक सुधारों की भूमि पर ही आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद के बीज बोए गए। इन आंदोलनों ने भारतीयों को अपनी सांस्कृतिक अस्मिता, आत्मगौरव और अधिकारबोध की ओर उन्मुख किया।



भारत सेवाश्रम संघ

भारत सेवाश्रम संघ एक हिंदू धार्मिक एवं आध्यात्मिक संगठन है, जो मुख्य रूप से मानवीय सेवाओं पर केंद्रित है। इसकी स्थापना वर्ष 1917 में महान देशभक्त संत आचार्य श्रीमत् स्वामी प्रणवानंद महाराज द्वारा की गई थी। यह एक पूर्णतः परोपकारी और दानशील संस्था है, जिसका दृष्टिकोण गैर-सांप्रदायिक, गैर-राजनीतिक और समावेशी है।

संघ का मुख्यालय कोलकाता, पश्चिम बंगाल में स्थित है और इसका भारत सहित अन्य देशों—जैसे यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका, गुयाना, त्रिनिदाद और टोबैगो, कनाडा, फिजी तथा बांग्लादेश—में तीन सौ से अधिक शाखाएं हैं। इसके अतिरिक्त, इस संगठन ने अफ्रीकी देशों, मलेशिया और इंडोनेशिया में भी कई मिशनों की शुरुआत की है। संघ के संती संयुक्त राष्ट्र के प्रतिनिधियों के साथ सीरिया और लेबनान जैसे देशों में भी कार्य कर चुके हैं।

धार्मिक राष्ट्रवाद, सांप्रदायिक संगठनों के प्रभाव और राष्ट्रीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण

भारत सेवाश्रम संघ में धार्मिक राष्ट्रवाद, सांप्रदायिक संगठनों के प्रभाव और राष्ट्रीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण को मुख्य आधार बनाया गया है। औपनिवेशिक काल में जब भारतीय समाज सांस्कृतिक अस्मिता के संकट और सामाजिक विघटन का सामना कर रहा था, तब संघ ने सांस्कृतिक मूल्यों और धार्मिक परंपराओं के माध्यम से समाज को संगठित करने का प्रयास किया। संघ ने धार्मिक राष्ट्रवाद को बढ़ावा देते हुए शिक्षा, स्वास्थ्य और आपदा राहत जैसे सामाजिक कार्यों के माध्यम से व्यापक जनसमर्थन प्राप्त किया। इसके प्रयासों ने समाज में सांस्कृतिक चेतना, आत्मगौरव और राष्ट्रीय पहचान को मजबूत किया, जिससे स्वतंत्रता आंदोलन के वैचारिक आधार को भी मजबूती मिली।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारत सेवाश्रम संघ का अध्ययन
2. भारत सेवाश्रम संघ द्वारा धार्मिक राष्ट्रवाद, सांप्रदायिक संगठनों के प्रभाव और राष्ट्रीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण का अध्ययन

अनुसंधान विधि

इस अध्ययन में धार्मिक राष्ट्रवाद, सांप्रदायिक संगठनों की भूमिका और राष्ट्रीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण के संदर्भ में भारत सेवाश्रम संघ की भूमिका का विश्लेषण करने हेतु गुणात्मक एवं ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक शोध पद्धति अपनाई गई। प्राथमिक स्रोतों के रूप में संघ के संस्थापक स्वामी प्रणवानंद के लेख, भाषण, संगठनात्मक अभिलेख, तथा समकालीन पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन किया गया। द्वितीयक स्रोतों में इतिहासकारों के शोध-ग्रंथ, जर्नल लेख और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर आधारित अकादमिक साहित्य शामिल किया गया। विषयवस्तु विश्लेषण के माध्यम से संघ की गतिविधियों को तीन प्रमुख आयामों में वर्गीकृत किया गया—(1) धार्मिक राष्ट्रवाद का प्रसार, (2) सामाजिक सेवा और सांस्कृतिक पुनर्जागरण, तथा (3) सांप्रदायिक संगठनों के साथ अंतःक्रिया। साथ ही, तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए संघ की विचारधारा और कार्यशैली की तुलना अन्य समकालीन संगठनों से की गई, जिससे इसकी विशिष्ट भूमिका को स्पष्ट किया जा सके। अध्ययन की प्रामाणिकता बनाए रखने के लिए विभिन्न स्रोतों का समन्वित विश्लेषण और क्रॉस-वेरिफिकेशन किया गया।



परिणाम और चर्चा

धार्मिक राष्ट्रवाद का सुदृढीकरण

भारत सेवाश्रम संघ ने धार्मिक राष्ट्रवाद को मजबूत करने में एक महत्वपूर्ण और संगठित भूमिका निभाई। इस संगठन ने हिंदू धर्म की मूल शिक्षाओं, परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया, विशेष रूप से उस समय जब औपनिवेशिक शासन के प्रभाव से भारतीय समाज में सांस्कृतिक हीनता की भावना बढ़ रही थी। संघ का उद्देश्य केवल धार्मिक गतिविधियों तक सीमित नहीं था, बल्कि यह भारतीयों के भीतर अपनी सांस्कृतिक पहचान के प्रति गर्व और आत्मविश्वास को पुनर्स्थापित करना भी था।

संघ ने विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों, आध्यात्मिक शिविरों, और प्रवचनों के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों तक अपनी विचारधारा पहुँचाई। इसके माध्यम से लोगों को यह समझाया गया कि उनकी धार्मिक परंपराएँ केवल आस्था का विषय नहीं हैं, बल्कि वे उनकी राष्ट्रीय पहचान का भी एक अभिन्न हिस्सा हैं। इस प्रकार, धार्मिक चेतना को राष्ट्रवादी भावना के साथ जोड़ा गया, जिससे लोगों में एक साझा सांस्कृतिक एकता का विकास हुआ।

इसके अतिरिक्त, स्वामी प्रणवानंद के नेतृत्व में संघ ने युवाओं को विशेष रूप से प्रेरित किया कि वे अपने धर्म और संस्कृति के संरक्षण में सक्रिय भूमिका निभाएँ। इसने धार्मिक राष्ट्रवाद को एक गतिशील स्वरूप दिया, जिसमें केवल विचार नहीं बल्कि सक्रिय भागीदारी पर भी जोर था।

हालांकि, इस प्रक्रिया में धार्मिक पहचान को प्रमुखता देने के कारण कुछ हद तक अन्य समुदायों के साथ दूरी की संभावना भी बनी, लेकिन व्यापक रूप से देखा जाए तो संघ के प्रयासों ने भारतीय समाज में सांस्कृतिक जागरूकता और राष्ट्रवादी भावना को मजबूत आधार प्रदान किया। इस प्रकार, भारत सेवाश्रम संघ ने धार्मिक राष्ट्रवाद को सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण के साथ जोड़कर एक प्रभावशाली दिशा प्रदान की।

सांस्कृतिक पुनर्जागरण में योगदान

भारत सेवाश्रम संघ ने भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण की प्रक्रिया को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। औपनिवेशिक काल में जब पश्चिमी प्रभाव के कारण भारतीय परंपराएँ और जीवन-मूल्य उपेक्षित होने लगे थे, तब संघ ने समाज को अपनी जड़ों की ओर लौटने के लिए प्रेरित किया। इसके प्रयासों का मुख्य उद्देश्य केवल परंपराओं का संरक्षण नहीं, बल्कि उन्हें समकालीन संदर्भ में पुनर्स्थापित करना था, ताकि वे समाज के लिए प्रासंगिक और उपयोगी बनी रहें।

संघ ने विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों—जैसे यज्ञ, आध्यात्मिक प्रवचन, सांस्कृतिक सभाएँ और शिक्षण कार्यक्रम—के माध्यम से भारतीय परंपराओं को जनसामान्य तक पहुँचाया। इन गतिविधियों ने लोगों में अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूकता बढ़ाई और उन्हें यह महसूस कराया कि उनकी परंपराएँ केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी मार्गदर्शक हैं। इस प्रकार, सांस्कृतिक पुनर्जागरण को एक जीवंत और सक्रिय प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया गया।

इसके साथ ही, स्वामी प्रणवानंद के नेतृत्व में संघ ने आध्यात्मिकता और नैतिक मूल्यों को समाज के पुनर्निर्माण का आधार बनाया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण केवल बाहरी रीति-रिवाजों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के आंतरिक विकास और नैतिक चेतना से भी जुड़ा हुआ है। इस दृष्टिकोण ने सांस्कृतिक जागरूकता को गहराई और स्थायित्व प्रदान किया।



इन सभी प्रयासों के परिणामस्वरूप समाज में आत्मगौरव और सांस्कृतिक आत्मविश्वास में वृद्धि हुई। लोगों ने अपनी परंपराओं को गर्व के साथ अपनाना शुरू किया, जिससे राष्ट्रीय पहचान भी मजबूत हुई। इस प्रकार, भारत सेवाश्रम संघ ने भारतीय संस्कृति के पुनर्जीवन को एक संगठित और प्रभावशाली दिशा प्रदान की।

सामाजिक सेवा के माध्यम से जनसमर्थन

भारत सेवाश्रम संघ ने सामाजिक सेवा को अपने कार्यों का केंद्रीय आधार बनाकर व्यापक जनसमर्थन अर्जित किया। संगठन ने यह समझा कि केवल वैचारिक या धार्मिक संदेशों के माध्यम से समाज को दीर्घकालिक रूप से नहीं जोड़ा जा सकता, बल्कि लोगों की वास्तविक समस्याओं का समाधान करना भी उतना ही आवश्यक है। इसी दृष्टिकोण से संघ ने शिक्षा, स्वास्थ्य और आपदा राहत जैसे क्षेत्रों में सक्रिय भागीदारी निभाई।

शिक्षा के क्षेत्र में संघ ने विद्यालयों, छात्रावासों और प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना कर समाज के वंचित वर्गों को शिक्षा से जोड़ने का प्रयास किया। इससे न केवल साक्षरता में वृद्धि हुई, बल्कि युवाओं में अनुशासन, नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना भी विकसित हुई। स्वास्थ्य सेवाओं के अंतर्गत चिकित्सा शिविरों, अस्पतालों और निःशुल्क उपचार की व्यवस्था ने ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों के लोगों को राहत प्रदान की, जिससे संगठन के प्रति विश्वास और सकारात्मक दृष्टिकोण मजबूत हुआ।

इसके अतिरिक्त, प्राकृतिक आपदाओं—जैसे बाढ़, भूकंप और अकाल—के समय संघ द्वारा त्वरित राहत कार्यों ने उसकी पहचान को एक संवेदनशील और उत्तरदायी संगठन के रूप में स्थापित किया। इन प्रयासों ने समाज के विभिन्न वर्गों के बीच संगठन की विश्वसनीयता को बढ़ाया और लोगों को इसके साथ जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

इन सभी गतिविधियों के परिणामस्वरूप संघ ने एक मजबूत सामाजिक आधार विकसित किया, जो केवल धार्मिक या सांस्कृतिक अपील पर आधारित नहीं था, बल्कि वास्तविक सेवा और मानवीय सहयोग पर टिका हुआ था। इस प्रकार, सामाजिक सेवा के माध्यम से प्राप्त जनसमर्थन ने संगठन को व्यापक स्वीकार्यता और दीर्घकालिक प्रभाव प्रदान किया।

राष्ट्रीय चेतना का विकास

भारत सेवाश्रम संघ ने भारतीय समाज में राष्ट्रीय चेतना के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संगठन ने यह समझा कि किसी भी राष्ट्र की मजबूती केवल राजनीतिक संघर्ष पर निर्भर नहीं होती, बल्कि लोगों के भीतर साझा पहचान और एकता की भावना का होना भी उतना ही आवश्यक है। इसी दृष्टिकोण के तहत संघ ने सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को आधार बनाकर एक व्यापक राष्ट्रीय चेतना विकसित करने का प्रयास किया।

संघ की गतिविधियों ने लोगों को यह एहसास कराया कि उनकी सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक परंपराएँ और सामाजिक मूल्य एक साझा राष्ट्रीय पहचान का हिस्सा हैं। इसने क्षेत्र, भाषा और जाति जैसे विभाजनों से ऊपर उठकर लोगों को एक व्यापक भारतीयता के सूत्र में बाँधने का कार्य किया। धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से संघ ने यह संदेश दिया कि भारतीय समाज की विविधता के भीतर एक गहरी एकता निहित है, जिसे पहचानना और सुदृढ़ करना आवश्यक है।



इसके साथ ही, स्वामी प्रणवानंद के नेतृत्व में संघ ने युवाओं और समाज के विभिन्न वर्गों को राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया। इस प्रक्रिया में राष्ट्रवाद को केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित न रखते हुए, उसे सामाजिक और सांस्कृतिक उत्थान के साथ जोड़ा गया। इससे राष्ट्रवादी विचारधारा को एक व्यापक और समावेशी स्वरूप प्राप्त हुआ।

परिणामस्वरूप, लोगों में राष्ट्रीय एकता, कर्तव्यबोध और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना मजबूत हुई। इस प्रकार, भारत सेवाश्रम संघ ने सांस्कृतिक आधार पर राष्ट्रीय चेतना को विकसित कर राष्ट्रवादी विचारधारा को सशक्त और स्थायी दिशा प्रदान की।

सांप्रदायिक प्रभाव और सीमाएँ

भारत सेवाश्रम संघ की गतिविधियों ने जहाँ एक ओर धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना को मजबूत किया, वहीं दूसरी ओर कुछ सीमाएँ भी सामने आईं। धार्मिक पहचान पर विशेष जोर देने के कारण संगठन की विचारधारा कुछ हद तक उन सांप्रदायिक संगठनों के समान प्रतीत होने लगी, जो धर्म के आधार पर सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण को परिभाषित करते थे। इससे समाज के विभिन्न समुदायों के बीच वैचारिक दूरी बढ़ने की संभावना उत्पन्न हुई।

संगठन द्वारा हिंदू सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण और प्रसार पर केंद्रित प्रयासों ने अपने अनुयायियों में एक मजबूत पहचान और एकता का भाव उत्पन्न किया, लेकिन इस प्रक्रिया में अन्य धार्मिक समुदायों के साथ समान स्तर पर संवाद और सहभागिता सीमित रह सकती थी। परिणामस्वरूप, कुछ संदर्भों में यह धारणा बनी कि राष्ट्रवाद का स्वरूप एक विशेष धार्मिक पहचान से जुड़ा रहा है, जिससे व्यापक सामाजिक समावेशन की प्रक्रिया प्रभावित हो सकती है।

इसके अतिरिक्त, उस समय के राजनीतिक परिदृश्य में विभिन्न सांप्रदायिक संगठनों की सक्रियता भी बढ़ रही थी, जिससे धार्मिक आधार पर पहचान की राजनीति को बल मिला। इस व्यापक वातावरण का प्रभाव अप्रत्यक्ष रूप से भारत सेवाश्रम संघ की कार्यप्रणाली और उसकी धारणा पर भी पड़ा। हालांकि, यह ध्यान देना आवश्यक है कि संघ का मुख्य उद्देश्य सामाजिक सेवा और सांस्कृतिक पुनर्जागरण था, न कि प्रत्यक्ष रूप से सांप्रदायिक विभाजन को बढ़ावा देना।

इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि धार्मिक राष्ट्रवाद के प्रसार के साथ-साथ सामाजिक संतुलन बनाए रखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। संघ की भूमिका को समझते समय इन सीमाओं और उनके संदर्भों को ध्यान में रखना आवश्यक है, जिससे इसका समग्र और संतुलित मूल्यांकन किया जा सके।

समग्र प्रभाव

भारत सेवाश्रम संघ का समग्र प्रभाव भारतीय समाज पर व्यापक, बहुआयामी और दीर्घकालिक रहा। संगठन ने धार्मिक राष्ट्रवाद को केवल वैचारिक स्तर तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे सामाजिक सेवा और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण के साथ व्यावहारिक रूप में जोड़ा। इस दृष्टिकोण ने उसकी भूमिका को अधिक प्रभावशाली और स्वीकार्य बनाया, क्योंकि यह सीधे तौर पर समाज की आवश्यकताओं और भावनाओं से जुड़ा हुआ था।



संघ ने एक ओर धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों को पुनर्जीवित कर लोगों में आत्मगौरव और पहचान की भावना को मजबूत किया, वहीं दूसरी ओर शिक्षा, स्वास्थ्य और राहत कार्यों के माध्यम से समाज के वंचित और जरूरतमंद वर्गों तक अपनी पहुँच बनाई। इस संयोजन ने संगठन को केवल एक धार्मिक संस्था न रहकर एक सामाजिक आंदोलन का रूप दे दिया, जिसने विभिन्न स्तरों पर समाज को प्रभावित किया।

इसके अतिरिक्त, स्वामी प्रणवानंद के नेतृत्व में संघ ने नैतिकता, अनुशासन और सेवा की भावना को बढ़ावा दिया, जिससे एक जिम्मेदार और जागरूक समाज के निर्माण में सहायता मिली। इसने राष्ट्रवाद को केवल राजनीतिक स्वतंत्रता के संदर्भ में नहीं, बल्कि सामाजिक उत्थान और सांस्कृतिक सशक्तिकरण के रूप में भी प्रस्तुत किया।

हालांकि, कुछ सीमाओं और आलोचनाओं के बावजूद, संघ की भूमिका को व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो यह स्पष्ट होता है कि उसने भारतीय समाज को संगठित करने, सांस्कृतिक चेतना को पुनर्जीवित करने और सामाजिक सेवा के माध्यम से जनसमर्थन प्राप्त करने में एक प्रभावशाली योगदान दिया। इस प्रकार, भारत सेवाश्रम संघ ने भारतीय समाज में एक संतुलित और बहुआयामी परिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

चर्चा

भारत सेवाश्रम संघ की भूमिका का विश्लेषण यह दर्शाता है कि इस संगठन ने धार्मिक राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और सामाजिक सेवा को एक साथ जोड़कर कार्य किया, जो इसे अन्य समकालीन संगठनों से अलग बनाता है। इसके प्रयासों ने भारतीय समाज में सांस्कृतिक जागरूकता और आत्मगौरव को पुनर्जीवित करने में मदद की, विशेषकर उस समय जब औपनिवेशिक प्रभाव के कारण पारंपरिक मूल्यों में गिरावट देखी जा रही थी। चर्चा के दौरान यह स्पष्ट होता है कि संघ की रणनीति केवल धार्मिक प्रचार तक सीमित नहीं थी, बल्कि उसने सामाजिक सेवा को एक प्रभावी माध्यम के रूप में अपनाया। इससे संगठन को व्यापक जनसमर्थन प्राप्त हुआ और उसकी स्वीकार्यता विभिन्न वर्गों में बढ़ी। शिक्षा, स्वास्थ्य और राहत कार्यों ने इसे जमीनी स्तर पर मजबूत आधार प्रदान किया, जिससे इसके राष्ट्रवादी विचार अधिक प्रभावी ढंग से समाज में प्रसारित हुए।

हालांकि, धार्मिक पहचान पर आधारित राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने के कारण कुछ आलोचनाएँ भी सामने आती हैं। इस प्रकार की विचारधारा कभी-कभी सांप्रदायिक विभाजन को भी जन्म दे सकती है, विशेषकर जब विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच संतुलन और संवाद की कमी हो। इसलिए, संघ की भूमिका का मूल्यांकन करते समय इसके सकारात्मक योगदानों के साथ-साथ इन संभावित सीमाओं को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

निष्कर्ष

समग्र रूप से, भारत सेवाश्रम संघ ने भारतीय समाज में एक महत्वपूर्ण और बहुआयामी भूमिका निभाई। इसने धार्मिक राष्ट्रवाद को सामाजिक सेवा और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण के साथ जोड़कर एक व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, जिसने समाज के विभिन्न वर्गों को प्रभावित किया। संघ के प्रयासों ने न केवल सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्रीय चेतना को मजबूत किया, बल्कि सामाजिक सेवा के माध्यम से लोगों के जीवन में व्यावहारिक सुधार भी लाए। इसके परिणामस्वरूप संगठन को व्यापक जनसमर्थन और स्थायी प्रभाव प्राप्त हुआ। भारत सेवाश्रम संघ



का योगदान भारतीय स्वतंत्रता कालीन समाज में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखा जा सकता है, जिसने सांस्कृतिक, सामाजिक और राष्ट्रवादी विचारधाराओं को एकीकृत कर एक सशक्त और संगठित समाज के निर्माण में सहायता की। हालांकि, भविष्य के अध्ययन के लिए यह आवश्यक है कि इस प्रकार के संगठनों की भूमिका को और अधिक समावेशी दृष्टिकोण से समझा जाए, ताकि उनके प्रभाव का संतुलित मूल्यांकन किया जा सके।

संदर्भ

1. भारत सेवाश्रम संघ ने हिंसा के संदेश फैलाने के खिलाफ फिल्म निर्माण में कदम उठाया। हिंदुस्तान टाइम्स, 6 सितंबर 2016।
2. नरेंद्र मोदी ने भारत सेवाश्रम संघ के शताब्दी समारोह का उद्घाटन किया। द इंडियन एक्सप्रेस, 7 मई 2017।
3. भारत सेवाश्रम संघ के शताब्दी समारोह में नरेंद्र मोदी ने कहा कि स्वामी प्रणवानंद ने 'भक्ति', 'शक्ति' और 'जनशक्ति' के माध्यम से सामाजिक विकास को संभव बनाया। फाइनेंशियल एक्सप्रेस, 7 मई 2017।
4. नई दिल्ली में 24 अक्टूबर 2008 को भारत सेवाश्रम संघ के वार्षिक उत्सव दिवस पर आयोजित स्वतंत्रता एवं राष्ट्रीय एकता दिवस पर दिए गए अनुष्ठान में कहा गया कि यह संगठन 1917 से ही समाज के सिद्धांतों और उपेक्षित आक्रोश के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। प्राकृतिक आपदाओं के समय इसकी सहायता विशेष रूप से की जा रही है। बंगाल अकाल, मिदनापुर मील का पत्थर, पश्चिम बंगाल का बाढ़, भोपाल गैस त्रासदी, आंध्र प्रदेश मील का पत्थर, उड़ीसा सुपर मील का पत्थर, डिस्ट्रिक्टल सुनामी और बिहार की मधुमेह की भूख जैसी घटनाएं संयुक्त रूप से राहत और राहत कार्य में शामिल हैं।
5. दास, सुहासिनी (2004)। नोआखाली: 1946. ढाका: साहित्य प्रकाश।
6. संजय ओझा (18 मई 2005)। "परिवर्तन की हवाएँ - अधिनायकवादी पर स्टेक जनजातीय समुदाय।" द टेलीग्राफ, कोलकाता।
7. जयेश ठाकर (19 मार्च 2005)। "तकनीकी ग्रुप के सपने की किताब - कंप्यूटर कोर्स पूरा करने के बाद जन युवा युवाओं का अनिश्चित।" भविष्य। द टेलीग्राफ, कोलकाता।
8. "अंडमान और निकोबार में अंडमान और निकोबार में अस्मिता कार्यवाह संती।" द हिंदू, 19 फ़रवरी 2005।
9. भारत सेवाश्रम संघ ने हिंसा के संदेश फैलाने के खिलाफ फिल्म निर्माण में कदम उठाया। हिंदुस्तान टाइम्स, 6 सितंबर 2016।
10. साहा, दिव्येंदु (9 जनवरी 2019)। "गंगासागर और कुंभ मेले में आरक्षण कार्य-भारत सेवाश्रम संघ की सहायता से तीर्थों की सहायता।" वनइंडिया (बंगाली)।
11. स्टाफ़ रिपोर्टर (5 अप्रैल 2010)। "गरीबों के लिए अस्पताल के दरवाजे खुले।" द टेलीग्राफ, कोलकाता।